ईश्वर (God)

लाइबनित्ज के अनुसार ईश्वर स्वरूपतः परम चिद्‌णु (Monad Monandum) है। यह अद्वितीय, पूर्ण, असीम और अनन्त है। ईश्वर सृष्टि का आद्यप्रवर्तक है। यह सभी मोनडों का सृष्टिकर्ता है। ईश्वर ने मोनडों के निर्माण के समय ही उनमें सामञ्जस्य की स्थापना कर दी है। ईश्वर की तुलना में अन्य सभी चिद्‌णु अपूर्ण, अपेक्षाकृत कम क्रियाशील एवं कम शक्तिशाली हैं। ईश्वर पूर्ण रूप से सक्रिय चिद्‌णु (Actus Purus) है।

लाइबनित्ज ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिये हैं—

(I) सत्तामूलक प्रमाण (Ontological Argument): लाइबनित्ज के अनुसार सभी पूर्णताओं के समन्वय के रूप में ईश्वर का प्रत्यय संभव है। ईश्वर सबसे पूर्ण सत है। सत्ता या अस्तित्व पूर्णता का ही एक विशेष या गुण है। यदि ईश्वर परमपूर्ण है तो उसका अस्तित्व भी है। ईश्वर पूर्ण है क्योंकि वह सोपानक्रम में सर्वोच्च मोनड है और उसके अन्तर्गत निष्क्रियता (Passivity) और सम्भावना वास्तविक हो चुकि है। ईश्वर ही पूर्णतया वास्तविक (Actual Purus) है।

(II) ~~पर्याप्त~~ पर्याप्त कारणता का नियम (Law of Sufficient Reason): इस नियम के अनुसार वही घटना या वस्तु सत्य ~~सत्य~~ (Truth) है जिसके होने के ~~कारण~~ पर्याप्त कारण हों। दूसरे शब्दों में पर्याप्त हेतु या कारण के बिना वस्तु की सत्ता सिद्ध नहीं हो सकती। संसार की प्रत्येक वस्तु आकस्मिक है, अतः इन सांसारिक वस्तुओं की सत्ता का पर्याप्त कारण होना चाहिए। इसका पर्याप्त कारण सान्त नहीं, अपितु अनन्त ईश्वर है।

Scanned with CamScanner

लाइबनित्ज संभाव्य (Contingent) तथा अनिवार्य (Necessary) कारण में भेद करते हैं। सांसारिक वस्तुओं का अनिवार्य कारण ईश्वर है जो स्वयंभू तथा स्वयं कारण - कार्य श्रृंखला से परे और पूर्ण है।

(iii) शाश्वत सत्यों पर आधारित तर्क: लाइबनित्ज के अनुसार जगत में शाश्वत एवं अनिवार्य सत्यों का अस्तित्व है। जैसे - तर्कशास्त्र एवं गणित के सत्य। इन शाश्वत एवं अनिवार्य सत्यों का आधार एवं निर्माणकर्ता कोई शाश्वत एवं अनिवार्य सत्ता ही हो सकती है। यही सत्ता ईश्वर है।

(iv) पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम पर आधारित तर्क: लाइबनित्ज के अनुसार चिद्‌अणु स्वतंत्र एवं गवाक्षहीन हैं। ऐसी स्थिति में इनके मध्य सामंजस्य की समस्या उत्पन्न होती है। लाइबनित्ज के अनुसार इनके मध्य सामंजस्य का कारण कोई न कोई पूर्ण एवं असीम बुद्धि वाला व्यवस्थापक होना चाहिए। यह व्यवस्थापक ही ईश्वर है। ईश्वर ने चिद्‌अणुओं की रचना करते समय ही उनमें एक ऐसी व्यवस्था कर दी है कि एक में परिवर्तन होने पर दूसरे में भी तदनुरूप परिवर्तन अपने - आप होते जाता है। इनमें कोई कारण - कार्य संबंध या क्रिया - प्रतिक्रिया नहीं होती।

Scanned with CamScanner